सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का दशम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम डॉ. दिलीप कुमार नाथाणी द्वारा लिखित ''भारतीय धर्म एवं संस्कृति में श्राद्ध : एक अनुशीलन'' धर्मशास्त्रीय चिन्तन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना है। तत्पश्चात् प्रो. शम्भू कुमार झा द्वारा लिखित 'पितृभ्यःस्वधा' लेख श्राद्धविज्ञान विषयक विविध पक्षों का वैदिक सन्दर्भ में प्रस्तुतीकरण करता है। तृतीय लेख डॉ. दीपिका विजयवर्गीय द्वारा लिखित 'विवेकीराय के उपन्यासों में आंचलिकता' आधुनिक हिन्दी साहित्य की समालोचना के क्षेत्र में पर्याप्त महत्त्वपूर्ण तथ्यों का प्रतिपादन करता है। इसमें समीक्षाशास्त्रीय मानकों के क्रम से सामयिक साहित्यसृजन पर व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। डॉ. वत्सला द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य में रोमन लिपि का प्रयोग' लेख में रोमन लिपि के वैज्ञानिक स्वरूप को बतलाया गया है तथा हिन्दी साहित्य में उसके प्रयोग विषयक औचित्य को प्रतिपादित किया गया है।अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा